

श्रीमाँ द्वारा दिये गये
नववर्ष के सन्देश

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका
जनवरी २०२१

विषय-सूची

नववर्ष के सन्देश

श्रीमाँ द्वारा दिये गये नववर्ष के सन्देश

(१९४० से १९७३ तक)

सम्पादकीय टिप्पणी :

२०२० की देहलीज़ पार कर नववर्ष २०२१ आन पहुँचा...

क्या-क्या नहीं अनुभव कराया हमें २०२० ने...

हम प्रार्थना करते हैं कि यह वर्ष हम सबके लिए—समस्त धरा के चराचरों के लिए—शुभतम और कल्याणतम हो।

आइये, हम नूतन वर्ष का स्वागत श्रीमाँ द्वारा दिये गये नववर्ष के सन्देशों से करें—

नववर्ष के सभी सन्देश

श्रीमातृवाणी, खण्ड १५ से लिये गये हैं।



*Bonne Année
Blessings*



1940

a year of silence and expectation...

*let us find, O Lord, our entire
support in Thy Grace alone.*

Ji—

१९४०

नीरवता और प्रत्याशा का वर्ष...

भगवन्! हम एकमात्र तेरी 'कृपा' पर पूरी तरह आश्रित रहें।

दिसम्बर १९३९

1941

The world is fighting for
its spiritual life menaced
by the rush of hostile and
unwelcome forces.

Lord, we aspire to be
Thy valiant warriors so that
Thy glory may manifest
upon the earth

J. —

१९४१

संसार अपने आध्यात्मिक जीवन की रक्षा करने के लिए युद्ध कर रहा है जिसे विरोधी और आसुरिक शक्तियों के आक्रमण ने संकट में डाल रखा है।

हे प्रभो! हम यह अभीप्सा करते हैं कि हम तेरे वीर योद्धा बनें ताकि तेरी महिमा इस पृथ्वी पर अभिव्यक्त हो।

दिसम्बर १९४०

1942

*Glory to Thee, O Lord,
conqueror of every foe!
Give us the power
to endure and share in
Thy victory*

१९४२

तेरी जय हो, सब शत्रुओं पर विजय पाने वाले प्रभु! तेरी जय हो!

हमें ऐसी शक्ति दे कि हम अन्त तक अचल-अटल बने रहें और तेरी विजय में भाग ले सकें।

दिसम्बर १९४१

1943

*The hour has come when a choice
has to be made radical and definite.
Lord, give us the strength to reject
falsehood and emerge in Thy truth,
pure and worthy of Thy victory.*

वह समय आ गया है जब हमें एक चुनाव, मौलिक और सुनिश्चित चुनाव करना होगा।

हे प्रभो! हमें ऐसी शक्ति दे कि हम मिथ्यात्व का त्याग कर सकें, पवित्र और तेरी विजय के उपयुक्त पात्र बन कर तेरे सत्य में ऊपर उठ सकें।

दिसम्बर १९४२



हे सौभाग्यवती, उतर, निज शशि-स्वर्ण चरणों को धरती पर धर
इसके धरातल को वैभव प्रदान कर जिसकी निद्रा में हम सोये हैं।
ओ मेरी सौन्दर्य की राजकुमारी, तेजस्विनी सावित्री,
ओ मेरे सुख और अपने हर्षातिरेक की बंदिनी, बाध्य होकर
मेरे जीवन के प्रांगण में, निज कक्ष और निज देवालय में प्रवेश कर।

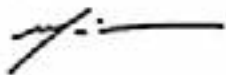
सावित्री, ५०८

1944

O Lord, the world implores Thee to prevent it from falling back always into the same stupidities.

Grant that the mistakes recognised may never be renewed.

Grant lastly that its actions may be the exact and sincere expression of its proclaimed ideals.



१९४४

हे प्रभो, समस्त मनुष्यजाति तुझसे प्रार्थना करती है कि तू उसे बार-बार उन्हीं मूर्खताओं में जा गिरने से बचा।

ऐसी कृपा कर कि जो भूलें पहचानी जा चुकी हैं, वे फिर से नये सिरे से दोहरायी न जायें।

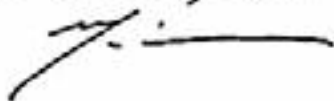
अन्त में, वर दे कि मनुष्यजाति के कर्म उन आदर्शों को ठीक-ठीक और सच्चे तौर पर प्रकट करें जिनकी उसने घोषणा की है।

दिसम्बर १९४३

1945

The earth will enjoy a lasting
and living peace only when men
understand that they must be
truthful even in their international
dealings.

Oh, it is for this perfect
truthfulness that we aspire.



१९४५

यह पृथ्वी तब तक सजीव और स्थायी शान्ति का उपभोग नहीं कर सकती जब तक मनुष्य अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों में भी पूर्ण रूप से सत्यपरायण होना नहीं सीख लेते।

हे प्रभो ! हम इसी पूर्ण सत्यपरायणता के लिए अभीप्सा करते हैं।

दिसम्बर १९४४

1946

Lord, it is Thy Peace we would have
and not a vain simulacrum of peace, Thy
Freedom and not a simulacrum of freedom,
Thy Unity and not a simulacrum of unity.
For it is only Thy Peace, Thy Freedom and Thy
Unity that can triumph over the blind
violence and the hypocrisy and falsehood
that still reign upon earth.

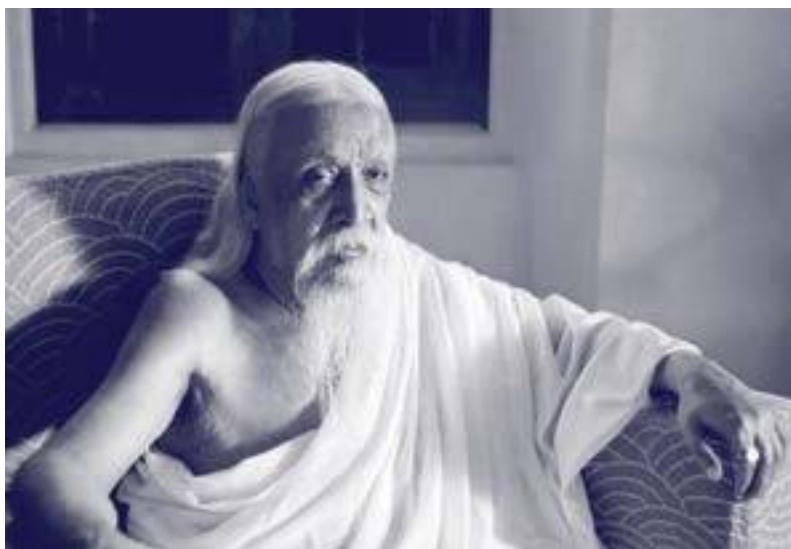
Grant that those who so valiantly
struggled and suffered for Thy Victory, may
see the true and genuine results of that
victory realised in the world. *Y.*

१९४६

हे प्रभो! हम तेरी शान्ति चाहते हैं, शान्ति का व्यर्थ आभास नहीं; तेरी स्वतन्त्रता चाहते हैं, स्वतन्त्रता का दिखावा नहीं; तेरी एकता चाहते हैं, एकता की छायामूर्ति नहीं। कारण, एकमात्र तेरी शान्ति, तेरी स्वतन्त्रता और तेरी एकता ही उस अन्धी हिंसा, छल-कपट और मिथ्यात्व को जीत सकती है जो अभी तक पृथ्वी पर राज्य कर रहे हैं।

हे नाथ! वर दे, जिन लोगों ने तेरी विजय के लिए इतनी बहादुरी के साथ युद्ध किया है और दुःख झेला है, वे इस विजय के सच्चे और वास्तविक परिणामों को इस जगत् में चरितार्थ होते देखें।

दिसम्बर १९४५

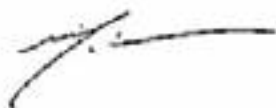


क्या विभाजित प्राणों को कर सकता है काल पुनर्युक्त ?
क्या वधित प्रेम ले सकता है देह के साथ पुनर्जन्म?
मन से अकृत, हृदय की भावनाओं से अस्वीकृत,
बोध से विस्मृत, परन्तु आत्मा में रहती है बनी स्मृति!

श्रीअरविन्द

1947

*At the very moment when
everything seems to go from bad to
worse, it is then that we must
make a supreme act of faith and
know that the Grace will never
fail us.*



१९४७

जिस समय हर चीज़ बुरी से अधिक बुरी अवस्था की ओर जाती हुई प्रतीत होती है, ठीक उसी समय हमें अपनी महती श्रद्धा का परिचय देना चाहिये और यह जानना चाहिये कि भगवत्कृपा कभी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी।

दिसम्बर १९४६

1948

*Toward, for ever forward!
at the end of the tunnel
is the light...
at the end of the fight
is the victory!*



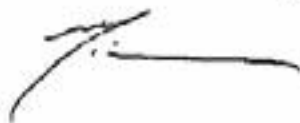
१९४८

बढ़ते चलो, निरन्तर बढ़ते चलो !
सुरंग के अन्त में है ज्योति...
युद्ध के अन्त में है विजय !

दिसम्बर १९४७

1949

Lord, on the eve of the new year I asked Thee what I must say. Thou hast made me see two extreme and opposite possibilities and given me the command to keep silent.



१९४९

हे नाथ, नये वर्ष से पहले की शाम को मैंने तुझसे पूछा कि मुझे क्या कहना चाहिये। तूने मुझे दो चरम सम्भावनाएँ दिखा दीं और चुप रहने का आदेश दिया।

दिसम्बर १९४८

1950

Don't speak. Act
Don't announce. Realise.



१९५०

बोलो मत, करो।
घोषणा न करो, कार्यान्वित करो।

दिसम्बर १९४९

1957

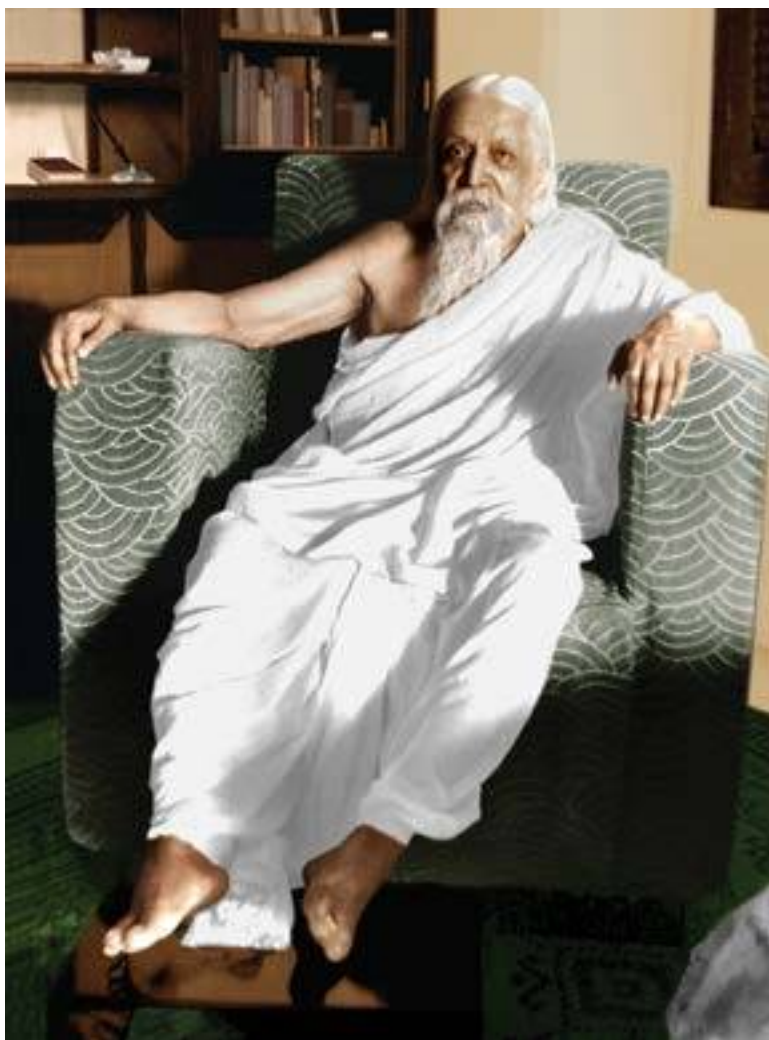
Lord, we are upon earth to accomplish
Thy work of transformation. It is our
sole will, our sole preoccupation. Grant
that it may be also our sole occupation
and that all our actions may help us
towards this single goal.



१९५१

नाथ, हम धरती पर रूपान्तर का तेरा कार्य पूरा करने के लिए हैं। यही हमारा एकमात्र संकल्प और हमारी एकमात्र धुन है। वर दे कि यही हमारा एकमात्र कार्य हो और हमारे सभी कर्म इसी एक उद्देश्य की ओर बढ़ने में सहायक हों।

दिसम्बर १९५०



मैं निज अन्तरप्राण में सत्य-अर्थ के प्रति जाग गयी हूँ
कि प्रत्येक के प्रति प्रेम और एकत्व की अनुभूति पाना ही जीवन है
और हमारे इस दिव्य रूपान्तर की यही जादुई कुंजी है,
मैं इसी सम्पूर्ण सत्य को जानती या खोजती हूँ, हे महात्मन्।

‘सावित्री’, पृ. ७२४

श्रीअरविन्द

१९५२

हे नाथ, तुने हमारी श्रद्धा की गुणवत्ता की परीक्षा लेने और हमारी सच्चाई को अपनी कसौटी पर परखने का निश्चय किया है। वर दे कि हम इस अग्नि-परीक्षा में से अधिक विशाल और अधिक पवित्र होकर निकलें।

1952

*O Lord, Thou hast decided to test
the quality of our faith and to pass
our sincerity on Thy touch-stone.
Grant that we come out greater
and purer from the ordeal.*



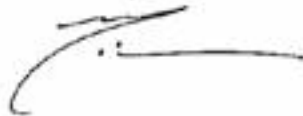
१९५३

नाथ, तूने हमसे कहा है : हार न मानो, डटे रहो। जब सब कुछ डूबता हुआ लगता है तभी सब कुछ बचा लिया जाता है।

दिसम्बर १९५२

1953

*Lord, Thou hast told us:
Do not give way, hold tight.
It is when everything seems lost
that all is saved.*



१९५४

मेरे स्वामी, इस साल के लिए सबको तुम्हारी यही सलाह है :
“किसी चीज़ के बारे में डींग न मारो। तुम्हारे कार्य ही तुम्हारे लिए बोलें।”

दिसम्बर १९५३

1954.

*My Lord, here is Thy advice to
all for this year:*

*"Have least about anything,
let your acts speak for you."*



१९५५

कोई भी मानवीय संकल्प भागवत संकल्प के सामने नहीं टिक सकता।
आओ, हम अपने-आपको स्वेच्छा के साथ, अनन्य भाव से भगवान् के
पक्ष में रखें और, अन्त में 'विजय' निश्चित है।

दिसम्बर १९५४

1955

*No human will can finally
prevail against the Divine's Will.
Let us put ourselves selflessly and
exclusively on the side of the Divine,
and the Victory is ultimately certain.*



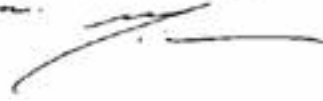
१९५६

बड़ी-से-बड़ी विजयें सबसे कम शोर मचाने वाली होती हैं।
नये जगत् के प्रकट होने की घोषणा ढोल बजा कर नहीं की जाती।
दिसम्बर १९५५

1956

*The greatest victories are
the least noisy.*

*The manifestation of a new
world is not proclaimed by
least of drum.*



१९५७

विजय केवल वही शक्ति पा सकती है जो विरोधी अशुभ शक्ति से
ज्यादा महान् हो।

क्रूस पर चढ़ा हुआ शरीर नहीं, महामहिमान्वित शरीर ही संसार का
उद्धार करेगा।
दिसम्बर १९५६

1957

*A Power greater than that of Evil
can alone win the victory. It is not
a crucified but a glorified body
that will save the world*



१९५८

हे प्रकृति, हमारी पार्थिव माँ! तूने कहा है कि तू सहयोग देगी और इस सहयोग की भव्य महिमा की कोई सीमा नहीं।

दिसम्बर १९५७

1958

*O Nature, Material Mother,
thou hast said that thou
wilt collaborate and there
is no limit to the splendour
of this collaboration.*



१९५९

निश्चेतना की एकदम तली में जहाँ वह बहुत कठोर, अनम्य, सँकरी और दमघोंटू है, मैं एक ऐसी सर्वसशक्त कमानी पर जा पहुँची जिसने तुरन्त मुझे निराकार, निःसीम 'बृहत्' में उछाल दिया जो एक नये जगत् के बीजों से स्पन्दित हो रहा था।

दिसम्बर १९५८

1959

*At the very bottom of the
consciousness most hard and rigid
and narrow and stifling I struck
upon an almighty spring that sent
me up forwards into a formless
limitless vast whirling with the
seeds of a new world.*



१९६०

जानना अच्छा है,
जीना और भी अच्छा है,
होना, वह सबसे अच्छा है।

दिसम्बर १९५९

1960

*To know is good,
to live is better,
to be, that is perfect.*

१९६१

आनन्द की यह अद्भुत सृष्टि, धरती पर उतरने के लिए हमारी पुकार
की प्रतीक्षा में हमारे द्वारे खड़ी है...

दिसम्बर १९६०

1961

*This wonderful world of delight
waiting at our gates for our call,
to come down upon earth...*

१९६२

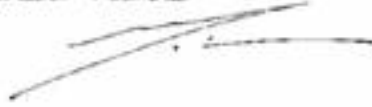
हमें पूर्णता की प्यास है। लेकिन उस मानव पूर्णता की नहीं जो अहंकार की पूर्णता है और दिव्य पूर्णता में बाधा देती है।

लेकिन उस एकमात्र पूर्णता की जिसमें 'शाश्वत सत्य' को धरती पर प्रकट करने की शक्ति है।

दिसम्बर १९६१

1962

*We thirst for perfection—
But this human perfection which is
a perfection of the ego and bars the
way to the Divine perfection.
But that one perfection which
has the power to manifest upon earth
the Eternal Truth*



१९६३

चलो, हम भागवत मुहूर्त के लिए तैयारी करें।

दिसम्बर १९६२

1963

*Let us prepare for
The Hour of God*



१९६४

क्या तुम तैयार हो?

दिसम्बर १९६३

1964

are you ready?



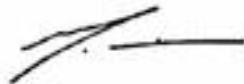
१९६५

‘सत्य’ के आगमन को नमस्कार।

दिसम्बर १९६४

1965

*Salute to the
advent of the Truth*



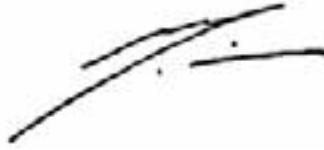
१९६६

आओ, हम 'सत्य' की सेवा करें।

दिसम्बर १९६५

1966

Let us serve the Truth



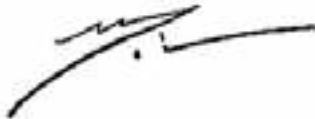
१९६७

मनुष्यो, देशो और महाद्वीपो!
चुनाव अनिवार्य है :
सत्य या फिर रसातल।

दिसम्बर १९६६

1.1.67

*Men, countries, continents !
The choice is imperative:
Truth or the abyss.*



१९६८

हमेशा युवा बने रहो,
पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास कभी बन्द मत करो।

दिसम्बर १९६७

1.1.68

Remain young,
never stop striving towards
perfection

१९६९

कथनी नहीं—करनी।

दिसम्बर १९६८

1969

No words - acts

१९७०

जगत् एक बहुत बड़े परिवर्तन की तैयारी कर रहा है।
क्या तुम सहायता करोगे?

दिसम्बर १९६९

1970

*The world is preparing
for a big change.*

Will you help?



१९७१

धन्य हैं वे लोग जो भविष्य की ओर छलाँग मारते हैं।

दिसम्बर १९७०

1971

*Blessed are those who
take a leap towards the Future*



१९७२

आओ, हम सब श्रीअरविन्द की शताब्दी के योग्य बनने की कोशिश करें।

दिसम्बर १९७१

1972

Let us all try to be worthy
of Sri Anand's company.



१९७३

जब तुम एक ही साथ समस्त संसार के बारे में सचेतन होते हो, तब तुम भगवान् के बारे में सचेतन हो सकते हो।

दिसम्बर १९७२

1973

When you are conscious
of the whole world at the
same time, then you can
become conscious of the Divine



अग्निशिखा

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

वार्षिक शुल्क : एक वर्ष—१८०रु.; तीन वर्ष—५२०रु.; पाँच वर्ष—८६०रु.

संस्थापक : श्रीअरविन्द सोसायटी

मुद्रक : स्वाधीन चैटर्जी, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस

प्रकाशक : प्रदीप नारंग, श्रीअरविन्द सोसायटी

प्रकाशक स्थल : सोसायटी हाउस, ११ सैं मातैं स्ट्रीट, पुदुच्चेरी ६०५००१

मुद्रण-स्थल : श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, नं. ३८, गूबैर ऐवेन्यू,
पुदुच्चेरी ६०५००१, भारत

सम्पादिका : वन्दना

Registered with the Registrar of Newspapers for India: No. 18135/70

दूरभाष संख्याएँ (०४१३) २३३६३९६-९७-९८

Email: info@aurosociety.org

Website: www.aurosociety.org

१९७३

जब तुम एक ही साथ समस्त संसार के बारे में सचेतन होते हो,
तब तुम भगवान् के बारे में सचेतन हो सकते हो।

1973

*When you are conscious
of the whole world at the
same time, then you can
become conscious of the Divine*

